

पद ८७

(राग: कानडा - ताल: धीमा त्रिताल)

किति सुख हे किती किति सुख हैं। हरिहरांचेही हितगुज हैं॥ध्रु॥
कपिल जनक जडभरत दिगंबर। वामदेव शुक धन हैं॥१॥
महावाक्य श्रवण मनन साधन। स्वानुभव सार निज हैं॥२॥ तूर्या
उन्मनि सुलीन समाधी। चरमवृत्ति भूषण हैं॥३॥ सच्चित्सुख
माणिक मार्ताण्डा। पूर्ण गुरुकृपा फल हैं॥४॥